मानव मन्दिर

वैसाखी विशेषांक

4/1996

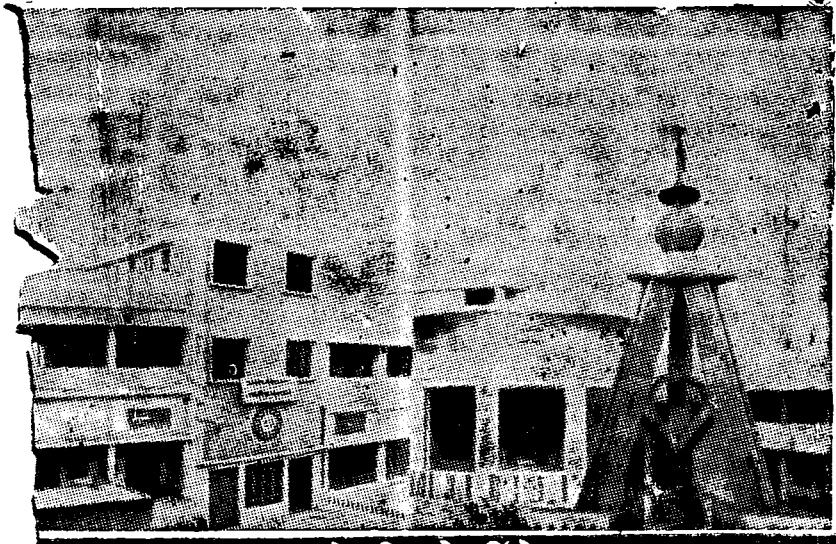

फकीर लायब्रेरी चैरीटेबल ट्रस्ट

सुतैहरी रोड, होशियारपुर

द्वारा अमूल्य भेंट

FORM I

(See Rule 8)

Place of Publication	Hoshiarpur.
Date of Publication	10th of every month
Periodicity of publication	Monthly
Printer's Name	Prem Prakash Sharma
Nationality	Indian
Address	Manavata Mandir, Hoshiarpur.
Editor's Name	Prem Prakash Sharma
Nationality	Indian
Address	Manavata Mandir, Sutehti Road Hoshiarpur.
Name and address of individuals, who own the Manav Mandir or partners or shareholders, holding more than one percent of the total	Faqir Library Charitable Trust, Hoshiarpur.

I, Prem Parkash Sharma hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Dated : 10

Signature of Publisher

Printed and Published by Prem Praksh Sharma at Shiv Dev Rao Press Manavata Mandir, Hoshiarpur for the Faqir Library Charitable Trust, Hoshiarpur.

मानवता मन्दिर [illegible] मासिक सत्संग

Data Dayal Maharishi
Shiv Brat Lal Ji Maharaj

Param Sant Param Dayal
Pt. Faqir Chand Ji Maharaj

Param Sant Manav Dayal
Dr. I. C Sharma Ji Maharaj

मासिक---

मानव मन्दिर

विश्व में मानव मात्र के सामाजिक, सांस्कृतिक
और आध्यात्मिक कल्याण और विकास की
सेवा में संलग्न मासिक पत्र।

सम्पादक :
श्री प्रेम प्रकाश शर्मा

वर्ष 23 | बुधवार 10 अप्रैल, 1996 | संख्या 12

हजूर दाता दयाल महर्षि शिवब्रत लाल जी महाराज

राधास्वामी जोग के लिखने का कारण

पक्षपात रहित होना ही सचाई की जान है। आत्मिक विषय पर हठधर्मी करना अत्यन्त मूर्खता है। राधास्वामी मत की बाबत जितना वेइन्नसाफी से काम लिया गया है अथवा अब तक लिया जा रहा है, दुनिया में शायद ही किसी पंथ या सम्प्रदाय के साथ यह व्यवहार किया गया हो। सचाई का विरोध तो एक साधारण सी बात है। भौतिक जगत में आत्मा छिपा हुआ रहता है। शरीर ही दिखाई पड़ता है। शरीर आत्मा के प्राकट्य में सदा रुकावट बना रहता है। यह बात हमेशा से चली आती है। जब कभी

कोई अवतार, बली, नवी, भक्त और आध्यात्मिक गुरु प्रगट हुआ, दुनिया उसके पीछे पड़ गई। यह ऐतिहासिक घटनायें हैं। कबीर साहब के साथ विरोध किया गया। नानक साहब के साथ कुछ विरोध नहीं हुआ। इसी प्रकार हजूर महाराज का प्रकट होकर जीवों की चिताना इस प्रकार की ऐतिहासिक घटनाओं की बौछार से बच नहीं सकता था, लेकिन इस अवसर पर विरोधियों को बहुत दूर की सूझ। उसी समय में खुल्लम-खुल्ला मशहूर किया गया कि यह जुठा खिलाने और थूक चटाने का पंथ है। कोई सन्त ऐसा नहीं हुआ जिसकी प्रसादी लेना कभी बुरा समझा गया हो। प्रत्येक धर्म, पंथ या मत में इसका रिवाज है। यहां चूंकि केवल बदनाम करने के उद्देश्य से यह बात प्रचलित की गई थी, इसलिए विरोधियों ने इसे अपना सबसे अधिक शक्तिशाली शस्त्र समझा।

हुजूर की मौज! मैं आर्य समाज के उच्चकोटि के लोगों में रहते हुए जब आत्मिक बेचैनी के दुःख से तंग आ गया, तब राधास्वामी मत की शरण ली। चारों ओर से आक्षेप प्रारम्भ हुए। उनका यहां वर्णन करना व्यर्थ में विषय को बढ़ाना है। अन्त में हमारे मित्रों ने यह दोषारोपण किया कि राधास्वामी मत की पुस्तकें अन्य लोगों से छिपाई जाती हैं। इसमें लज्जा की कोई बात अवश्य है, परन्तु इन लोगों की समझ में यह न आ सका कि जो लोग अधिकारी नहीं हैं, उनको इन पुस्तकों से क्या लाभ होगा और भौतिक-वादी आध्यात्मिक विषय को किस प्रकार समझ सकेंगे।

बात केवल इतनी थी मगर यहां तो बात का बतंगड़ बनाना था। मैंने इस बेसमझी को दूर करने को लेखनी उठाई। साधु नामी पत्र निकाला। 'तत्वदर्शी', 'सरस्वती भंडार', 'सन्त सन्देश', 'विज्ञानी' आदि आदि अनेक सर्वप्रिय मासिक पत्र लिखने और निकालने प्रारम्भ किए। सैंकड़ों आध्यात्मिक पुस्तकें लिखीं और अनसमझी की उलझन में फंसे हुए भाईयों को उनके अध्ययन करने तथा खंडन करने का अवसर दिया कि वे खण्डन के क्षेत्र में आकर अपने दिल का गुबार निकालेंगे; मगर अफसोस है कि किसी ने लेखनी नहीं उठाई। मेरा उद्देश्य यह था कि वे राधास्वामी मत की बुराईयाँ प्रकट करते और मुझे सोचने का अवसर हाथ आता। मैं किसी पन्थ या सम्प्रदाय का अपमान नहीं करना चाहता। राधास्वामी मत चूंकि एक सहनशील और शान्ति प्रिय पन्थ है, उसका आदेश भी नहीं है किसी धर्म या सम्प्रदाय या उसके आचार्य या महापुरुष के विरुद्ध कोई अपमानसूचक शब्द लेखनी या वाणी से निकाला जाय; क्योंकि प्रत्येक धर्म या पंथ अपने भाव विचार और आध्यात्मिक विश्वास के अनुसार एक अनादि सत्ता वाले पुरुष की पूजा का दम भरता है। भिन्नता का होना प्रकृति की जान है। फिर यहां किसी जानकार को चित्त दुखाने जैसा अपराध करने की आवश्यकता ही क्या है। मेरा मन्तव्य इस लेखनी उठाने से यह था कि विपक्षियों के तर्क-वितर्क सुनकर मुझे राधास्वामी मत के गुणों पर विचार करने का अवसर प्राप्त हो, लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

अब तमाम पंजाब में इसके अनुयायी बहुतायत से हो गए हैं। यह मेरे लेखों का परिणाम हुआ। यह कुछ सन्तोष-जनक नहीं है। मैंने न कभी प्रवचन कहे न व्याख्यान दिए और न ज़बानी कथन से काम लिया। लेखनी की प्रबल गति ही स्वमं शंकाओं का समाधान करती चली गई। जहां-जहाँ विदेशों--अमरीका, चीन, जापान आदि आदि में दौरा करने का अवसर मिला, वहाँ भी लोग इस पंथ के प्रेमी और विश्व सी ह ते चले गए। वे समझ गए कि अध्यात्मिक जगत में राधास्वामी मत का स्थान निराला है।

सन्त मत को क्रियात्मक (साधन) रूप में कबीर साहब ने प्रगट किया। उसको गुरु नानक साहब, दादू साहब, ग़रीबदास जो तथा अन्य अनेक महापुरुषों ने अपने-अपने अवसर पर अधिक चमका दिया, मगर समय के हेर-फेर से सार ज्ञान छिपते-छिपते इतना लोप हो गया कि अनेक पन्थों के अनुयायी उसकी ओर से अनभिज्ञ होकर बेपरवाह हो गए और इस जगत व्यापी पंथ का प्रचार प्रायः लुप्त हो गया। परम पुनीत सत्पुरुष हुज़ूर महाराज ने राधास्वामी मत के द्वारा फिर से उसको पुनरुद्धार ही नहीं किया बल्कि दार्शनिक तथा विद्वतापूर्ण रूप में उसके मौलिक सिद्धान्तों को स्पष्ट भाषा में वर्णन किया और अधिकारी पुरुषों को अध्यात्मिक उन्नति की ओर आकर्षित ह ने का अवसर प्रदान किया। मगर चूंकि सब पुस्तकें हिन्दी लिपि में हैं, उर्दू जानने वाले लोग इसके लाभ से वंचित हैं और विरोधी दल की नासमझी उनको इसके लाभ उठाने से रोक रही है, इस

दृष्टि से मैंने बहुत सी पुस्तकें लिखीं। अब राधास्वामी जोग के रूप में यह पुस्तक इसी ध्येय से भेंट की जा रही है। आशा है कि यह पुस्तक न केवल दिलचस्प होगी बल्कि सचाई प्रिय लोगों को सार भेद के समझने का अवसर प्रदान करेगी। यदि दस-बीस लोगों ने भी साधन सम्पन्न बनने व आत्मिक आनन्द प्राप्त करने का विचार किया तो मेरा परिश्रम अकारथ न समझा जायगा।

बहुत आवश्यक सूचना

ऐसा अनुभव में आया है कि 'मानव मन्दिर' पत्रिका के कुछ श्रद्धालु और प्रेमी पाठकों के पास प्रति मास दो दो ग्राहक नम्बरों से दो दो प्रतियाँ 'मानव मन्दिर' की पहुंच जाती हैं। कई सज्जनों ने तो इस तथ्य की जानकारी देते हुए उन दो दो नम्बरों में से एक पर मानव मन्दिर भेजना बन्द करने के लिए लिखा है। अब भी यदि कुछ प्रेमी पाठकों के पास दो दो प्रतियां पहुंच रही हों तो कृपा कर सूचना देते हुए एक ही प्रति हर महीने भेजने के लिए लिख दें। इस से बची हुई प्रतियां आय इच्छुक पाठकों तक पहुंचाई जा सकेंगी। ऐसी सूचना देते हुए जिन दो नम्बरों से पत्रिका पहुंच रही हो, उन दोनों नम्बरों की जानकारी देते हुए यह बताने की कृपा अवश्य करें कि किस नम्बर और पते पर उन्हें भेजना जारी रखा जाए और कौन से नम्बर व पते पर भेजना बन्द कर दिया जाए।

सत सनातन धर्म
अथवा
सत मानव धर्म

परमसन्त परम दयाल
पंडित फकीर चन्द जी महाराज

मन वचन कर्म से शुद्ध रहना

आप लोगों को धन्यवाद देता हूं। संयोग वश कुम्भ पर आ गया। जीवन में 81 वर्ष हो गए। पहिली बार कुम्भ पर आया हूं। एक बार हरिद्वार गया था अपने भाई की स्त्री के फूल लेकर। तब मैं 20-21 वर्ष का हूंगा। मैं बिल्कुल सादा आदमी! तो मेरे भाई ने कहा कनखल में फूल डालने हैं। हमारा पांडा अमुक है। वहां फूल डाल देना और अपना माम लिखवा आना। जब मैं गाड़ी से उतरा मुझे पूछने लगे कहाँ के वासी? कहाँ के वासी? मैं सच्चा आदमी था। मैंने कहा अमुक गांव का रहने वाला

हूं। इस तरह फूल डालने आया हूं। एक कहता है मैं पंडा हूं। मैंने कहा हमारा पंडा अमुक है। उसने कहा मैं उसका मुनीम हूं। आप चलिए। जो कुछ मेरे भाई ने कहा था यह कुछ देना, मैंने वह सब वहां उसको दे दिया। मैंने उससे कहा कि अब नाम लिख लो। वह कहता है कि वह हरिद्वार की पौड़ी पर है। उसने ताँगा कर दिया। छः आने उसने तांगे वाले को अपने पास से दे दिए। जब मैं वहां गया हरिद्वार पर तो वहां पंडा ने पांच हज़ार गालीयां निकालीं। वह तो ठग था। तुमको ठग लिया। हमारा आदमी नहीं था। अब मेरे पास पैसा नहीं था। रेलवे का नौकर था। सवा रुपया मेरे पास था। सहारनपुर से मैंने जाना था। वहां से पास था। हरिद्वार से सहारनपुर के 12 आने लगते थे। मैंने कहा यह सवा रुपया मेरे पास है। बारह आने किराए के दे दो बाकी आठ आने तुम ले लो खैर उसने नाम लिख लिया। गंगा माई के यहां आया। वहाँ पौड़ी पर मत्था टेका। कहा कि ऐ माई मुझको अपने जीवन में अपने पास मत लाना। उस दिन के बाद गंगा पर नहीं गया। यह है हम लोगों की दशा! मैं यहां आया। कुम्भ की दशा देखी और समझी। तीर्थ स्थान है। इसमें स्नान का सुख मिलता है जो देश काल वस्तु के अनुसार होता है मगर असली वस्तु जो है वह है सत्संग। वह जीवों को प्राप्त नहीं होता। आज छटवां सत्संग है कि मैंने सन्त मत या राधास्वामी मत को सनातन मत ही समझा है। जो कुछ समझा है वह कह देता हूं। सनातन मत में

सत्संग की महिमा है। सुनो :—

गंग भक्ति यह निर्मल धारा
सरस्वति ज्ञान वैराग।
जमुना कर्म धर्म व्यौहारा,
प्रेम प्रीति अनुराग॥

मैं अपना जीवन अपने सामने रखता हुआ सोचता हूं ऐ फ़कीर ! लोगों को उपदेश देने के बजाए पहिले अपनी आत्मा से पूछ कि तुझको सत्संग से क्या मिला। सत्संग को जहां गंगा यमुना और सरस्वती तीन की उपमा (मुशाबहत) दी है। गंगा हमारे शुभ विचार भक्ति के, प्रेम के, योग के है। यमुना--हमारा कर्म, संसार की उन्नति, पेट पालना, दुनिया का व्यवहार है। यह दोनों हम गृहस्थियों के आधार हैं। कोई दुनियां के दुःखों का, कर्मों का सताया हुआ, दुनिया की आशाओं का मारा हुआ सत्संग में आता है। कोई पुण्य करने के लिए, शुभ कर्म करने के लिए या कोई ऐसे ही शुभ भाव लेकर सत्संग में जाता हैं। मैं भी इसी तरह दातादयाल के दरबार में गया था। निर्धन था। संसार में दुखी था, अशान्त था। प्रेम का, भक्ति का, ईश्वर की भक्ति का मेरे अन्दर भाव था। तो मुझे क्या मिला ? सत्संग से मुझे मिली है शान्ति। कैसे ? सत्संग के प्रभाव से मुझे यह ज्ञान हो गया कि यह जो संसार है

इसमें हर एक जीव अपना-अपना कर्म भोगते हैं। जैसा-2 हमने किया है उसका फल हमको मिलता है। यह तो मेरा अपना अनुभव है। कुछ आप लोग जो सत्संगी जन मुझे मिले, उन्होंने मुझे यह ज्ञान दे दिया। दूसरे कितने ही लोग मेरे पास आते हैं, दुखी होते हैं, अशान्त होते हैं। जिसका समय आया हुआ होता है, वे धनवान हो जाते हैं उनका दुःख दूर हो जाता है। मैं ब्राह्मण हूं। झूठ नहीं बोलता। मैं कुछ नहीं करता। उनका समय आया हुआ होता है। मेरे पास से ख्याल ले जाते हैं। जब कभी उनके जन्म पत्रों को देखता हूं तो मालूम होता है कि उनकी यह दशा ही ऐसी आई हुईथी कि उनका यह काम बनना थो। इस ख्याल से मुझे क्या हुआ ? यह कि फकारचन्द दुनियां में जो कुछ तेरे साथ होगा या हुआ है, वह तेरे पिछले कर्मों के कारण है। इसलिए मुझे शान्ति मिल गई। रह गया प्रेम भक्ति, योग व ज्ञान, मैं मन्दिरों में जाया करता था। मैं मीरा बाई की तरह घुंघरू बांधके नाचा, गुरु महाराज की सेवा की, सोने का ताज बनाया, चांदी का हुक्का बनाया, चन्दन का सिंहासन बनाया आदि। जब गुरु पदवी पर आया और मेरा रूप दूसरों के अन्दर प्रगट होने लगा और उन्होंने कहा बाबा ! तू यह कह कर गया, वह कर गया, तू मरते समय ले गया, तो मुझे ज्ञान हो गया कि प्रेम भी, भक्ति भी और योग भी सब उनके मन की भावना थी। इन दोनों अनुभवों से मुझे शान्ति मिल गई। यदि मैं भगवान को याद करता हूं तो भगवान को अपने से भिन्न नहीं समझता। वह मुझ में रहता

है। राम को परमात्मा को मैं अब अपने से अलग नहीं समझता।

दिल में है तस्वीरे यार ।
जब ज़रा गर्दन झुकाई देख ली।

शरीर के दुख सुख आते रहते हैं मगर उनकी मैं परवाह नहीं करता, घबराता नहीं, रोता नहीं, क्योंकि मैं समझ गया कि जिसके जैसे-२ कर्म हैं वह भोगने पड़ते हैं। चूँकि सत्संग से मुझे शान्ति मिली इसलिए मेरे सत्संग से, यदि कोई ध्यान से सुने, ध्यान से मनन करे तो मुझे आशा है कि उसको भी शान्ति मिलेगा। लिखा :--

सत्संग तीरथराज प्रयाग ।
गंगा भक्ति है निर्मल धारा,
सरस्वती ज्ञान वैराग ।
जमुना कर्म धर्म व्यवहारा,
प्रेम प्रीति अनुराग ।
घट विश्वास धरो पद दृढ़ता,
गुरु पद पूरण राग ।

गुरु पद क्या है ? वह दातादयाल के चरण नहीं हैं। गुरु पद--पद कहते हैं पदवी को। गुरु नाम है ज्ञान का, सच्चे विवेक का, सच्ची समझ का अर्थात् सच्ची समझ और सच्चा विवेक आ जाने का नाम ही गुरु पद है। जैसे डिप्टी

कमिश्नर का पद, स्टेशन मास्टर का पद। पद का अर्थ है पोजीशन (Position)। दुनिया उन गुरुओं के पैरां को ही जीवन भर चाटती-चाटती मर गई मगर शान्ति नहीं मिली।

सत्संग कई प्रकार के होते हैं। कहीं सत्संगों में वीररस होता है, कहीं प्रेम रस, कहीं भक्ति रस। हर एक सत्संग का भिन्न-भिन्न रस होता है। यह जो मेरा त्रिबेनी का सत्संग है, यह शान्ति देता है। क्यों? क्योंकि मैं अब पहिली श्रेणियां पार कर आया। अब पहिले जो मेरी सैर थी अर्थात् प्रेम रस, भक्ति रस, वीर रस के सत्संग के लिए, वह पूरी हो गई। अब बुढ़ापा आ गया। कोई आदमी बूढ़े आदमी से यह आशा करे कि वह बच्चों की तरह खेल सकता है तो यह गलती है। वह नहीं खेल सकता। इसलिए मेरी पोजीशन बदल गई। मेरे पास केवल वह आदमी लाभ उठा सकते है, जिनको थोड़ी बहुत बुद्धि है और वही कुछ समझ सकते हैं, जिन्होंने कुछ साधन किए हैं, और जो जीवन का अनुभव कर चुके हैं।

अत: सत्संग की महिमा क्या है? सत्संग की महिमा सनातन धर्म में गाई गई है। तो मुझे सत्संग से क्या मिला? छोटी आयु में प्रेम रस भी लिया, घुंघरू बांध के नाचा भी, गुरु महाराज (दातादयाल) से भी काफी प्रेम किया, भक्ति का आनन्द लिया। अब बुढ़ापा आ गया। अब क्या मिला? शान्ति मिली।

मेरे सत्संग का विषय है कि सनातन धर्म क्या है। एक तो सत्संग की महिमा है। वह मैंने आपको बता दी। यह कुम्भ है। भिन्न-भिन्न स्थान हैं। हर एक अपने २ स्थान पर ठीक है। भक्ति रस वाले रास लीला देखकर रस लेते हैं। प्रेम रस वाले और तरह आनन्द लेते हैं। कोई भी गलत नहीं है। अपनी-2 श्रेणियां हैं। मैं न किसी को बुरा कहता हूं और न किसी को भला कहता हूं। अपनी-अपनी जगह पर हैं। मेरा सत्संग ज्ञान रस देता है, शान्ति रस देता है, विवेक रस देता है जिसके समझ जाने से मनुष्य का जीवन सुखमय, समृद्धिशाली और आनन्दमय और अन्त में मोक्ष को प्राप्त हो सकता है।

सनातन धर्म में एक और सभ्यता है? वेदों को पढ़ो। वह कहते हैं मन वचन कर्म से शुद्ध रहो। 'मनसा, वाचा, कर्मणा' सुना होगा अर्थात् मन वचन कर्म से शुद्ध रहो। मैं अपने आप से पूछता हूं कि यदि हम वचन कर्म से शुद्ध न रहें तो? कर्म से यदि शुद्ध नहीं रहते तो झगड़ा हो जाता हैं। मैंने आपको गाली दी। आपने मुझे गाली दी। उसके बदले में मैंने आपको डण्डा मारा। अच्छा! कर्म से तो झगड़ा हो सकता है मगर मन वचन से हम क्यों शुद्ध रहें, यह एक प्रश्न है। हम किसी को कहते हैं यार तू गन्दे विचार न रक्खा कर। वह कहता है कि क्या हानि है? मैं आपको हानि बताता हूं। जो मनुष्य मन के विचार गन्दे या मलीन रखता है द्वेष, ईर्ष्या, घृणा विरोध रखता है, दिल में कुढ़ता है दूसरों का बुरा चाहता है वह अपने हाथ से बेशक किसी का

बुरा न करे, अपने वचन से किसी को कुछ न कह मगर वह ऐसा करता है। वह संसार में बुराई को फैलाता है। यह मनोविज्ञान है। मेरी बात ध्यान से सोचो। मनुष्य के मन के अन्तर जितने विचार उठते हैं, उन विचारों का नक्शा पहिले हमारे मस्तिष्क पर पड़ता है।

जब हम स्वप्न में जाते हैं हमारे सामने वह गन्दे विचार रूप बनाकर आते हैं। कितनों को स्वप्न में साँप बिच्छू दिखाई पड़ते हैं, कुएं में गिरते हैं। यह सब के साथ बीतती है। भयानक कठिनाइयां आ जाती हैं। वह क्यों आती हैं? यह उन को आती हैं जिनके मन शुद्ध नहीं होते। वह बुरी बातें, गन्दे विचार, शत्रुता तथा घृणा आदि के विचार जो करते रहते हैं, उनकी दशा यह होती है कि स्वप्नावस्था में उनको बुरे भयानक स्वप्न आते हैं। जिनके मन शुद्ध रहते हैं वह या तो वायु में उड़ते हैं या उनको कोई देवता दिखाई पड़ते हैं, अच्छे-२ दृश्य दिखाई आते हैं। यदि मन से शुद्ध न रहने से यह हानि हमको पहुंचती है कि हम स्वप्न में डरते हैं। यदि दिन के समय काम भोग या स्त्री भोग के विचार हो गए तो रात को स्वप्न में स्त्री आ जाएगी। उससे भोग करते रहोगे। परिणाम यह होगा कि वीर्य पात हो जायगा। वहमी हो जाओगे। इसलिए सनातन धर्म कहता है कि मन वचन कर्म से शुद्ध रहो। यदि तुम साधन करते हो तो करोगे अभ्यास, तुम्हारा विचार किसी और जगह चला जायगा। तुम्हारी वृत्ति नहीं ठहरेगी। मन चंचल होगा। तुम्हारे सामने वही दृश्य आयेंगे जो तुम्हारे

अपने संस्कारों से तुम्हारे दिमाग पर पड़े हुए हैं । इसलिए मन को शुद्ध रखने का एक यह लाभ है।

दूसरा लाभ—अन्त समय जब शरीर छूटेगा, तो जिस प्रकार के विचार अपने अन्तर में अपने जीवन में लिए हुए हैं वही विचार रूप बनाकर तुम्हारे सामने आयेंगे। यदि घृणा द्वेष आदि के विचार रहे हैं तो अन्त समय में तुम्हारे लिए यमदूत आ जायेंगे । वैतरणी नहीं बन जायेंगे। जब प्राण छूटते हैं तो तरह-तरह के ख्याल आते हैं। कहते हैं यमदूत आ गए। मुगदर लेकर आ गए। पकड़ कर ले चले। वह कौन आता है? बाहर से तो आता नहीं। मैं भी कभी ऐसी ही समझता था कि बाहर के यमदूत आते हैं मगर जब लोग कहते हैं कि बाबा फ़कीर चन्द आया लेने के लिए तो मैं तो गया नहीं, फिर कौन गया? इन्दौर की घटना मैंने परसों भी सुनाई थी। इससे मुझे निश्चय हो गया कि यह अपने ही मन के विचार हैं। जो मन के शुद्ध हैं, भले हैं धर्मात्मा हैं उनको लेने वाला कौन आएगा? देवता, धर्मराज के दूत आयेंगे। अच्छी शकलों वाले आयेंगे। तुम्हारे ही विचार सुन्दर रूप बनकर या धर्मराज के दूत बनकर तुम्हारे सामने आयेंगे। तुम्हारे ही विचार हैं जो रूप बना बनाकर तुमको डराते धमकाते हैं। इसलिए मरते समय आदमी को ख्याल दिया जाता है गाय का या गुरु आ गया भई तुझे लेने को, राम आ गया लेने को, देवी आगई लेने को, शिवजी आगए लेने को। क्यों? ताकि उसको अन्त समय

में वह ख्याल जो मिला हुआ है वह उस ख्याल से उसका मन दूसरे ख्यालों से हटकर उसके विश्वास के अनुसार एक रूप में लग जायेगा। एक रूप में लगने से क्या होगा? यमराज के जो तरह-तरह के ख्याल हैं जिसने तुमको सताना था उससे तुम बच जाओगे। इसलिए मरते समय हिन्दुओं ने चूंकि गौ को मुख्य समझा है वह गौ की पूंछ पकड़ा देते हैं।

तो मन को शुद्ध रखने से क्या लाभ होगा? एक तो हमारे स्वप्न अच्छे होंगे। दूसरे हमारा अभ्यास में चित्त अच्छा लगेगा तथा अन्त समय में हम यमराज के दुख से बच सकते हैं। इसलिए सनातन धर्म की जै: सनातन धर्म ने हमको जो कुछ सिखाया वह ठीक सिखाया मगर हम लोगों ने उसका पालन नहीं किया। अब रह गई शुद्धता हमारे मन की। यदि तुम मन को शुद्ध नहीं भी रखते तो वर्तमान विज्ञान के अनुसार जो कुछ तुम मुंह से कहते हो, जो कुछ तुम सोचते हो, वह ब्रह्माण्ड में रहता है। हमारा विचार हमारे शब्द, हमारे कर्म नष्ट नहीं होते। ब्रह्माण्ड में मौजूद रहते हैं। अपनी चित्त की वृत्तिके अनुकूल वाले जो दूसरे आदमी होते हैं, हमारे विचार रूप धारण करके उन पर प्रभाव करते हैं। इसलिए वायु मण्डल शुद्ध रहना चाहिए। सुनते हैं प्राचीन काल में जैनियों के ऋषि, बौद्धों के धर्माचार्य जो

'अहिंसा परमो धर्म:'

का पालन करने वाले होते थे, जहां-जहां उन्होंने तप किया,

वहां पशु परस्पर का द्वेष छोड़ गए। यह बात तो मैंने सुनी हुई है। मैं आंखों देखी कहता हूं। एक शिष्यों की बाड़ी है जिला होशियारपुर में। 5-6 मील लम्बी चौड़ी है। वहां एक साधु रहता था। उसके पास मैंने देखा था कि सांप, जंगली पशु, बघेर और गायें तथा हिरन उसके साथ फिरते रहते थे। कोई एक दूसरे को कष्ट नहीं देता था। हमने जाना कि बाबा बड़ी करनी वाला है। सिद्धि शक्ति उसमें बहुत थी। सांप फुंकार मारते थे। दो सांप थे। एक हरे रंग का जो ऊपर फिरता था पेड़ों के पत्तों में। एक नाग था जो जमीन पर चलता था। तो उसने कह देना आवे लंडिया अर्थात् इधर आ। वे आजाते।

यह है प्रत्यक्ष प्रमाण जो अपनी आँख से देखा हुआ है। इसलिए मैं जानता हूं कि जिस जगह जैसा आदमी रहता है उसकी वैसी रेडियेशन फैलती है। वह रेडिएशन उस घर में रहती है। जो दूसरा आदमी उस मकान में जाता है उसके ऊपर उस स्थान की रेडियेशन प्रभाव करती है। यदि तुम गन्दे हो, तुम्हारे विचार गन्दे हैं, संभव है तुम अपनी जुबान से किसी को हानि न करो, अपने हाथ से किसी को दुख न दो मगर चूंकि तुम्हारा मन तो गन्दा है तो उस वायु मण्डल में गंदगी रहेगी। जो भी वहां आयेगा, तुम्हारे गंदे विचारों से प्रभावित होगा।

अपना मुंह काला करके कहता हूं। एक बार दाता

दयाल के दरबार में गया। 20-25 आदमी सत्संग में बैठे हुए थे। जिस तरह मैं बोलकर कह रहा हूं, दातादयाल वचन कह रहे थे। मैं बैठा हुआ था। मेरा मन अन्तर ही अन्तर में तरह-तरह के विचारों में बहुत गंदा होने लगा। बहुत रोका अपने आप को मगर रोक न सका। दातादयाल ने बचनों के ढंग को बदला। कहने लगे देखो, सत्संग में आकर गंदे विचार नहीं करने चाहिए। वायुमंडल दूषित होता है। ज्यों-ज्यों वह कहते जायें, मेरा मन छलांगें मारे और काबू न आए। फिर मुझे कहते हैं फ़कीर! तुझे कह रहा हूं। मैं सच कहता हूं कि मैंने बड़ी कोशिश की इस मन को रोकने की, रुका फिर भी नहीं। बंसधारी लाल वहां मैनेजर था। फिर कहा--बंसधारीलाल! इस फ़कीर को ले जाओ। वहां खड़ा करो। इसके सिर पर सौ जूते लगाओ। यह सत्संग में आता है। सत्संग के वातावरण को गंदा करता है।' उन्होंने ऐसे शब्द कहे। मुझे याद आता है अपना पिछला समय। मेरी बाह पकड़ी। बाहर ले जाने लगे तो पं. विष्णु दिगम्बर जो बड़े भारी प्रतिष्ठित थे, वहां बैठे हुए थे, उन्होंने मेरी बांह पकड़ ली। सत्संग समाप्त हुआ। मैं दातादयाल के चरणों में गिरा, रोया, कहा महाराज! मेरे वश की कोई बात नहीं। यह मन बड़ा चंचल है।

ऐ सत्संगियो! मैं तुमको क्या दे सकता हूं। मैं तो स्वयं गंदा आदमी रहा हूं मगर अपना अनुभव तुमको बताता हूं कि मन के प्रभाव दूसरों पर पड़ते हैं। अपने घरों को देखो! जिस घर में एक स्त्री कलहनी तथा हर समय जलती

रहती है तो जो भी बाहर से उस वातावरण में आयेगा, वह प्रभावित हुए बिना न रहेगा। किसी समय तुम किसी की शक्ल देखते हो। शक्ल देखते ही तुम में कुछ का कुछ हो जाता है। किसी समय किसी को शक्ल देखकर प्रसन्न हो जाते हो। यह क्या है? यह है मन, बचन कर्म का नियम। यह काम करता है। अब दुनिया मानेंगी नहीं अत: साईंस का प्रमाण देता हूं। मैंने यह बताया है कि जो कुछ तुम सोचते रहते हो, तुम यदि मर जाओगे तो वह तुम्हारा सोचा हुआ यहां मौजूद रहेगा। जिस घर में रहते हो वहां उसका वायुमण्ल रहेगा। मनुष्य यह सोचता है कि मैं जो गंदे विचार अपने मन में रखता हूं उसका किसी पर प्रभाव नहीं पड़ता। जो मन के गंदे हैं वे दुनिया में गंदगी फैलाते हैं। जो मन के अच्छे हैं वे दुनिया में शुद्धताई फैलाते हैं। इसलिए सनातन धर्म कहता है मन कर्म से शुद्ध रहो।

यह तो हो गया धार्मिक जगत के दृष्टिकोण से। अब विज्ञान के नियम को लो। आज एक वर्ष हुआ मैंने समाचार पत्र में पढ़ा कि रूस के विज्ञान वेत्ताओं ने एक यन्त्र निकाला है। वह यन्त्र अब वह (**Develope**) कर रहे हैं। एक आदमी कोई बड़े उच्च दिमाग वाला था। कई एक चीजें उसने रिसच की थीं। वह उसके दिमाग में थीं। वह दुनिया को बता नहीं गया। उसके अन्दर ही अन्दर रहीं। वह यन्त्र क्या करता है? जब उसके प्राण निकल जाते हैं तो उस यन्त्र को उसके मस्तिष्क पर लगा देते हैं। फिर आगे स्क्रीन (**Screen**) कैमरा चलता है। आगे रख देते

हैं। उसके जितने संकल्प विकल्प हैं, जो कुछ उसने अपने जीवन में सोचा हुआ है जो कुछ उसने रिसर्च (research) की हुई हैं वह कुल की कुल लिखावट और फोटो की ककों में स्क्रीन पर आ जायेगी। आदमी मौजूद नहीं। उसके प्राण निकल चुके हैं मगर जो कुछ उसने अपने दिमाग के अन्तर रिसर्च की हुई है वह मौजूद है। इससे सिद्ध हुआ कि हिन्दू शास्त्र कितने उच्चकोटि की शिक्षा तुमको दे गए कि मन वचन कर्म से शुद्ध रहो। यह हिन्दू शास्त्रों का कथन है और यह साइंस का कथन है। इसलिए मैं भी प्रयत्न करता रहता हूं। तुम सत्संग में आते हो। मेरा सत्संग ज्ञान. विवेक, समझ लिए रहता है। इसमें तुम आकर्षण देखते हो। इसमें घुंघरू बांधकर गोपियों का नाच या धनुषवाण का नाटक नहीं है, क्योंकि हर एक आदमा की अपनी स्टेज (Stage) या स्थिति है। मेरी वह स्टेज या श्रेणी बीत गई। जिस स्टेज का मैं हूं मैं वही बात कहता हूं। यही दातादयाल ने अपने शब्दों में कही है।

(क्रमशः)

सद्गुरु के सत्संग में परमतत्व का अनुभव

परम सन्त सद्गुरु हिज़ होलीनेस मानव दयाल

डा॰ ईश्वर चन्द्र शर्मा जी महाराज

(बुलन्दशहर 18-2-1988)

शब्द

किस मुख से तेरी महिमा गाऊं,
तू सत्तपुरुष अविनाशी है।
चेतन घन अमल विमल निर्मल,
सत सदन परम सुखरासी है॥
कोई अगुन कहे, कोई सगुन कहे,
कोई निराकार साकार कहे।
तू सब कुछ है और कुछ भी नहीं,
धुरपद धुरधाम निवासी है॥

नहीं मन ने थाह कभी पाई,
नहीं बुद्धि में आई चतुराई।
चित चिन्तन कैसे करे तेरा,
द्वैत अद्वैत प्रकाशी है ॥
मन बना बिहंगम मीन मकर,
मरकट बन कर कूदा अन्दर।
चींटी की चाल चला घट में,
कह उठा तू अगम उदासी है ॥
राधास्वामी रूप में प्रकट हुआ,
दर्शन देकर कृतार्थ किया।
निज शब्द से अपना भेद दिया,
घट अघट का सत्य निवासी है ॥

अखण्डमंडलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन, तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥

राधास्वामी !

आज के छोटे से सत्संग के लिए दाता दयाल जी महाराज का जो उच्च कोटि का शब्द पढ़ा गया, उसमें बताया गया है कि जिस मालिक को ढूंढ़ने के लिए लोग अनेक प्रकार के योगों को अपनाते हैं, अनेक प्रकार के कर्म-काण्ड करते हैं, वह मालिक आखिर है क्या ? दुनिया में बहुत से ऐसे धर्म हैं, जो कहते हैं कि जो कुछ उनकी किताबों में लिखा है बस वही सत्य है। अनुयायियों को चाहिए कि

बे उसे खुदा का वचन मानकर उस पर चलते जायें, बहस नहीं करें। बाईबल में यह नहीं बताया गया कि ईश्वर का स्वरूप क्या है आत्मा का स्वरूप क्या है। अधिकतर धर्म अन्धविश्वास पर ही आधारित हैं, और जिस मालिक की खोज है, उसका तो पता ही नहीं कि वह है क्या। सनातन धर्म अन्धविश्वास पर आधारित नहीं है। इस धर्म की पहली खोज ही यहां से शुरू होती है कि परमतत्व, मालिक, ईश्वर, कर्त्ता, सृष्टा है क्या, उसका स्वरूप क्या है या कैसा है। मानव का स्वरूप कैसा है और परमतत्व तथा मानव का आपस में क्या सम्बन्ध है ?

हमारे ऋषि, मुनि अन्तर में वर्षों ध्यान लगाने के बाद, खोजते-खोजते इस परिणाम पर पहुंचे कि मानव स्वयं ही मालिक का चित्र है, मालिक का नमूना है। बाईबल में भी यही लिखा है, **'Man is the image of God'** आज के शब्द में मालिक के कई नाम बताए गए हैं, जैसे सत्तपुरुष, अविनाशी, सुखराशि, आदि-आदि। ये सभी नाम मालिक के किसी न किसी, उस लक्षण को बताते है जिसका कि अनुभव किया गया है :—

जाकी रही भावना जैसी।
तिन प्रभु मूरत देखी वैसी ॥

कुछ लोग कहते हैं कि मालिक निराकार है, कुछ कहते हैं कि वह साकार है। साकार का अर्थ है कि जिसको आंखों

द्वारा देखा जा सके, जिसका आकार हो। जिसका आकार होता है, उसका रूप होता है, रंग होता है और नाम होता है। लोगों का कहना है कि जिसका रूप-रंग है, जिसको हमने नाम दे दिया, वह तो सीमित हो गया वह असीम कहाँ रहा? परन्तु मालिक तो असीम है सीमित नहीं, फिर वह साकार कैसे हुआ? इस तरह के तर्क चलते रहते हैं।

अक्षर क्या है? वह है, जिसका कभी नाश नहीं होता, जो अपने आप में अविनाशी है। अविनाशी का वर्णन नहीं किया जा सकता। वर्ण क्या है? जो लिखा जाता है वह वर्ण है। जब अक्षर का रूप बनाया जाता है, तो वह अक्षर वर्ण हो जाता है। 'अ' अपने आप में अविनाशी है, इसलिए वह निराकार ही है। जिसका रूप होता है, आकार होता है, वह तो बदलता ही रहता है, किन्तु निराकार परिवर्तनशील नहीं होता। क्योंकि जिसका आकार नहीं, वह बदलेगा कौन? अविनाशी जो बदलता नहीं, वह निराकार होता है और निराकार को समझना बहुत ही कठिन है। निराकार जब तक साकार नहीं होता, तब तक उसको समझना लोगों के लिए बहुत ही कठिन होता है, इसलिए मालिक जो कि निराकार है, गुप्त है, उसे समय-समय पर लोगों की भलाई के लिए साकार होना या बनना पड़ता है। मालिक ने अपने आपको साकार किया। उसने अपने आपको प्रकाश और शब्द, अर्थात् रूप और नाम में प्रकट किया या साकार किया।

प्रकाश रूप है और शब्द नाम है। नाम और रूप मालिक की दो अभिव्यक्तियां हैं, दो रूप हैं। मालिक ने अपने आपको कैसे साकार किया? उसने अपने को निगुर्ण से सगुण बना दिया। मालिक की जब इच्छा होती है, वह साकार हो जाता है और फिर निराकार हो जाता है। उसी ही मालिक ने हमें भी शरीर के अन्दर भेजा है। हम अपने आपको शरीर में देखते हैं, अपने आपको मन में देखते हैं, तथा आत्मा के आनन्द का अनुभव करते हैं। हमारा शरीर, मन तथा आत्मा या सत्, चित्, आनन्द में आने का कोई मकसद तो है! हां। हमारा इस पृथ्वी पर आने का विशेष मकसद है। न जाने लोग इस चक्कर में क्यों पड़ते हैं तथा लड़ते-झगड़ते हैं कि मालिक निराकार है, मालिक साकार है, वह निर्गुण है, वह सगुण है। यदि आपको मालिक के स्वरूप का ही ज्ञान नहीं, पता नहीं, तो आप उसकी तलाश कैसे करोगे?

मैंने आपके सामने मंगलाचरण रखा :—

अखण्डमंडलाकारम् :—मालिक का रूप गोल है, सारा ब्रह्माण्ड गोल है, सारी आकाशगंगायें गोल हैं, सब नक्षत्र गोल हैं, सूर्य चन्द्रमा तथा पृथ्वी गोल हैं। जब शक्ति जगत में आती है, तो गोलाकार मण्डल बनती चली जाती है और इन मण्डलों से अनेक मण्डल बनते हैं। मालिक का एक मण्डल हमारी आँखों को दिखाई देता है और वह मण्डल है उसके विराट् रूप में सारा जगत् (जिसको ब्रह्मा का जगत्)

कहते हैं। दूसरा मण्डल है ब्रह्माण्डी मन जो विष्णु का है और दिखाई नहीं देता। तीसरा मण्डल है ब्रह्माण्डी मन जो विष्णु का है और दिखाई नहीं देता। तीसरा मण्डल है प्रकाश या शिव का। इन सभी मण्डलों को बनाने वाला मालिक अखण्ड है अविनाशी है जो सब जगह मौजूद है। जैसे लकड़ी को दियासलाई से जलाने से उसमें गर्मी आ जाती है, उसी प्रकार मनुष्य के कण-कण में उसी प्रकार मनुष्य के कण-कण में उसी ही मालिक की ताकत है। जड़-चेतन तक में भी उसी ही मालिक की ताकत है, उसी ही मालिक की सुन्दरता है, उसी ही का प्रकाश है। जो गुरु, उस मालिक तक पहुंचने का रास्ता बता दे, या उस मालिक के दर्शन करा दे, ऐसे गुरु को कोटि कोटि बार नमस्कार।

हां! तो मैं आपको बाईबल की बात बता रहा था। यदि आप बाईबल को शुरू से लेकर अन्त तक पढ़ें, आपको कहीं भी पढ़ने में नहीं आयेगा कि आत्मा का स्वरूप क्या है। परन्तु हमारे ऋषियों ने सैंकड़ों वर्ष तक तपस्या करने के बाद अपने अनुभव से बताया कि आत्मा क्या है और जिस मालिक को तुम ढूंढ़ रहे हो पहले यह तो जानो कि वह मालिक है क्या। उस मालिक की महिमा का वर्णन नहीं किया जा सकता, उसकी महिमा को गाया नहीं जा सकता। इसलिए आज के शब्द में दाता दयाल जी महाराज ने कहा है :—

'किस मुख से तेरी महिमा गाऊं,
तू सत्तपुरुष अविनासी है।'

महिमा तो असत् की यानि कि नाशवान चीजों की गाई जाती है। आप पहाड़ों की महिमा गा सकते हैं. नदियों की महिमा गाई जाती है। आप पहाड़ों की महिमा गा सकते हैं, नदियों की महिमा गाई जाती है, परन्तु इन सब चीजों का सार तो वही मालिक ही है, वही सत्तपुरुष है। उस तत्तपुरुष की महिमा वर्णन करने की हम में शक्ति ही कहां है क्षमता ही कहां है? अविनाशी की व्याख्या तो कोई बिरला सन्त ही कर सकता है। यद्यपि अविनाशी की पूरी व्याख्या नहीं की जा सकती, तथापि उसको स्वीकार करने से इन्कार भी नहीं किया जा सकता, क्योंकि यह सारा जगत् जो चल रहा है, वह किसी न किसी अविनाशी तत्व से ही तो निकला है।

'चेतन घन अमल, विमल, निर्मल सत् सदन परम सुखरासी है।" चेतना कहते हैं जानने की हालत को। आंखों से देखना, कानों से सुनना, जुबान से चखना, त्वचा से स्पर्श करना,नाक से सूंघना आदि सब चीजें चेतना के अन्तर्गत आती हैं। जाग्रत अवस्था में, हमें चेतना का अनुभव होता है। स्वप्न की अवस्था में अर्द्ध चेतना होती है। लेकिन जब हमारा ध्यान मन से निकल कर गहरी नींद में आत्मा में

चला जाता है, तो वहां स्वप्न वाली अर्द्ध चेतना भी नहीं होती। क्या उस गहरी नींद के अन्दर चेतता की क्षमता नहीं है ? मालिक न तो चेतन है, न अचेतन है, वह तो चेतनघन है। सूर्य की अग्नि लकड़ी में मौजूद है। उस लकड़ी को दियासिलाई के जलाने से लकड़ी में गर्मी आ जाती है। गहरी नींद में आत्मा के अन्दर चेतना नहीं होती, लेकिन आनन्द का अनुभव तो होता है। आपकी आत्मा चेतनघन का नमूना है। आत्मा के अन्दर चेतना छुपी हुई है। जागते हुए आपको चेतना होती है, सुषुप्ति की अवस्था में चेतना नहीं होती, सूषुप्ति को अचेतन अवस्था भी कह सकते हैं. लेकिन उसके अन्दर भी चेतना छुपी हुई है। चेतना से अधिक महत्वपूर्ण चीज़ है चेतनघन, यानि की चेतना से ओतप्रोत। आत्मा उसका नमूना है। मालिक जब मनुष्य के चोले में आता है, तो उसमें रूप, रस, गन्ध आदि होता है। इसलिए सन्तमत के अन्दर गुरु की पूजा होती है, अर्थात् शारीरिक पूजा होती है। गुरुमत या सन्तमत या सन्तमत में पांच प्रकार की बाहरी भक्ति को माना जाता है :—

1) देखना।
2) सुनना।
3) स्पर्श करना।
4) सूंघना।
5) चखना।

देखना :- देखने का अर्थ है निहारना। गुरु की आंखों

को टकटकी लगाकर देखने से आंखों के द्वारा गुरु की रेडीएशन आती है।

'स्वामी बैठक अद्भुती राधा निरखनहार'

इसलिए राधा बन कर स्वामी रूप गुरु को लगातार देखते रहो।

सुनना :—कानों से गुरु की वाणी को सुनना।

स्पर्श :—हाथों से गुरु के चरणों का स्पर्श करना।

सूंघना :—गुरु द्वारा दिए गए फूलों को लगातार सूंघना। फूल सूंघने से गुरु की रेडीएशन आती है।

चखना :—गुरु की दी गई प्रसादी को चखना।

यह पांच प्रकार की बाहरी भक्ति है और चार प्रकार की आन्तरिक भक्ति होती है, चित्त मन, बुद्धि अहंकार। चित्त में मालिक का चिन्तन करे, मन से मनन करे और मनन करने के बाद उसी का ही ध्यान करे। बुद्धि से उस मालिक को समझने की कोशिश करे और अपने अहंकार को मालिक के चरणों में समर्पित कर दे। यह पांच प्रकार की अन्दरूनी भक्ति. नवधा भक्ति कहलाती है। मालिक अथवा गुरु को नौ तरीकों से प्यार किया जा सकता है। नौ तरीकों से प्यार करना केवल भौतिक विषय नहीं है।

चेतनघन है इसलिए यह देखा नहीं जा सकता, कानों से सुना नहीं जा सकता, उसका चित्त में चिन्तन भी नहीं किया जा सकता है, लेकिन वह है ज़रूर। जब मालिक मनुष्य के चोले में आता है और उस हस्ती से हमारा सम्पर्क होता है, तो हमें परम आनन्द व सुख की अनुभूति होती है। सद्गुरु के पास बैठने मात्र से ही आपको तसल्ली मिलती है शान्ति मिलती है, आत्मिक सुख मिलता है,क्योंकि वह चेतन नहीं, चेतनघन है।

चेतनघन, अमल, विमल, निर्मल, यह रूह के लक्षण हैं। अमल का अर्थ क्या है? अमल का अर्थ है मल से रहित होना। सद्गुरु जब मनुष्य के चोले में आता है, उसमें मनुष्यों ही की भांति रूप, रंग और रस होता है। वह आम मनुष्यों की तरह खाता, पीता तथा व्यवहार करता है किन्तु फर्क इतना होता है कि उसके शरीर में मालिक की मस्ती की धारा हमेशा बनी रहती है। वह जो कुछ भी कर्म करता है, ये कर्म उसको बांधते नहीं, अर्थात् उसके बन्धन का कारण नहीं बनते। सद्गुरु किसी से नफ़रत नहीं करता, अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए कोई कर्म नहीं करता। उसका स्वभाव अमल है यानि बगैर मल या मैल के है। सद्गुरु की सद्भावना के बावजूद भी, अगर उ के किसी कर्म से किसी को हानि पहुंचती है, हानि पहुंचती है, तो इसके लिए सद्गुरु जिम्मेवार नहीं है उसको बुरे कर्म का फल नहीं भोगना पड़ेगा। जब सद्गुरु

अपने कर्म से किसी को लाभ पहुंचाता है, तो उस लाभ या अच्छाई का फल भी गुरु को नहीं मिलेगा। वह तो भलाई बुराई के फल से ऊपर है।

इसमें सन्देह नहीं कि लोगों की भलाई के लिए सद्गुरु मनुष्य के चोले में आता है, उसको शरीर धारण करना पड़ता है। परन्तु उसके शरीर की भी बहुत महिमा है, बहुत महत्व है। सन्त तुलसीदास जी ने भी कहा है कि गुरु के चरणों में बहुत ही ताकत होती है :—

बन्दौं गुरु पद पदम परागा !
सुरुचि सुवास सरस अनुरागा ।।

सद्गुरु राम की चरणरज को छूते ही पत्थर बनी अहिल्या जीवित हो उठी, वह तर गई। जब तुम जीते-जागते गुरु के चरण-कमल को छुओगे, तो तुम भी तर जाओगे। इसी चरणरज की शक्ति को रामभक्त खेवट भली भांति जानता था और उस चरणरज को छूने के लिए उतावला था। जब भगवान राम गंगा किनारे पहुंचे और खेवट को देखते ही उन्होंने उसे नाव लाने को कहा, तो खेवट के मन में, परम तत्व श्री राम के चरण छूने तथा उनकी रज लेने तथा चरण धोने की लालसा एकदम जाग्रत हो गई। वह भगवान के पांव धोना चाहता था, परन्तु हिचकिचाहट के कारण उनसे कुछ कह नहीं सकता था, तो वह नाव लाने के लिए टाल-मटोल करने लगा। खेवट भोलाभाला, सीधा

सादा व्यक्ति था और भोलेभाले लोगों पर सद्‌गुरु की विशेष कृपा होती है। भगवान राम ने जब केवट की हिचकिचाहट का कारण पूछा, तो केवट बड़ी दीनता से बोला, 'भगवान! मैं पहले आपके पांव धोना चाहता हूं। क्योंकि मैंने सुना है कि आपके चरणों की धूल लगने से वह बेचारी छूमन्तर हो जायेगी। मेरे परिवार को पालने का एकमात्र साधन यह नाव ही तो है। यदि मेरी नाव उड़ गई दयानिधान! मैं अपने परिवार का पालन-पोषण कैसे करूंगा?

दया के सागर सद्‌गुरु भगवान राम बोले, 'प्यारे केवट! आखिर तू चाहता क्या है? साफ़-साफ़ क्यों नहीं बताता?

भगवान राम के मीठे दयाभरे शब्दों को सुनकर केवट बोला, 'भगवान! मैं आपके चरण धोना चाहता हूं।' यहां पर तुलसीदास जी कहते हैं :—

सुन केवट के बैन,
प्रेम लपेटे अटपटे।
विहसे करुणा ऐन,
जानकी लखन सन॥

भगवान राम जानते थे कि केवट पूर्ण भक्त है, वह लक्ष्मण और सीता की ओर देख कर मुस्कराये। फिर

उन्होंने खेवट को कहा, 'अच्छा, खेवट ! तुम मेरे चरण धो सकते हो।'

खेवट ने बड़े ही प्रेम से भगवान राम के चरण धोये और तब प्रेम से गद्‌गद हो कर भगवान राम, लक्ष्मण और सीता को उस पार उतारा। जब पार उतर कर भगवान राम, सीता द्वारा दी गई सोने की अंगूठी को खेवट को प्रसन्नत से देने लगे, इस पर खेवट बोला, भगवन्‌ ! आप वह अंगूठी मुझे देकर कैसा अनर्थ कर रहे हैं ? आपका और मेरा व्यवसाय तो एक ही है। एक ही व्यवसाय वाले लोग एक दूसरे से पैसे थोड़े लेते हैं। धोबी, धोबी से पैसे नहीं लेता, नाई, नाई से पैसे नहीं लेता, तो फिर मैं आपसे पैसे क्यों लूं ?' भगवान राम मुस्करा कर बोले प्यारे खेवट ! तुमने यह कैसे कहा कि तुम्हारा और मेरा व्यवसाय एक ही है ?' खेवट बड़ी नम्रता से बोला, 'हाँ, भगवन्‌ ! एक ही तो है। मैं लोगों को इस तट से उस तट पर उतारता हूं उस तट से इस तट पर। आप लोगों को भवसागर से उस पार ले जाते हो, भवसागर से पार उतारते हो। व्यवसाय एक हुआ कि नहीं पार उतारने का। मैंने आपको इस पार से उस पार उतारा है, इसके बदले आप मुझे भवसागर से पार उतार देना भगवन्‌ !"

भगवान राम खेवट की चतुराई और अपार भक्ति को देखकर गद्‌गद हो गए।

सद्गुरु हर घड़ी, हर समय प्रेममय होता है। प्रेम की धार उसको हर समय निकलती ही रहती है। जहां प्रेम होता है, वहाँ नफरत का सवाल ही नहीं उठता, प्यार करने वाला व्यक्ति कभी किसी से नफरत नहीं करता और न ही जानबूझ कर किसी भी व्यक्ति को नुकसान पहुंचा सकता है। मैं बचपन से ही किसी को जानबूझ कर दुःख नहीं देता था। मेरा विचार था कि यदि मैं किसी को सुख नहीं पहुंचा सकता, तो कम से कम किसी को दुःख तो नहीं पहुंचाऊं। मैं जीवन भर इस आदर्श पर चलता रहा। शायद यह पिछले जन्मों के कर्मों या संस्कारों के कारण हुआ हो। परन्तु मैंने देखा कि इस आदर्श दर चलने स पहले चाहे कष्टों का सामना क्यों न करना पड़े, अन्त में इस आदर्श पर चलने वाले की जीत ही होती है, इस मार्ग पर चलने से लाभ ही लाभ हैं, हानि नहीं।

अहंकार के कारण ही व्यक्ति दूसरों को दुःख देता है। गुरु के चरणों में झुकते ही जब आपका घमण्ड, अहंकार टूटता है, तो गुरु की दया का द्वार आपके लिए खुल जाता है। सदगुरु परमदयाल होता है। आप यदि ग़लती भी करो, तो वह अपनी अपार दया के कारण पिघल कर आपके अपराधों को क्षमा कर देता है। आप यदि कोई अपराध नहीं करो, कोई ग़लती नहीं करो, तो वह आपको क्षमा कैसे करेगा ?

भूल करना पाप नहीं है, परन्तु भूल करके उसको न सुधारना मूर्खता है।

वन्दौं गुरुपद पदम परागा ।
सुरुचि सुवास सरस अनुरागा ॥

गुरु के आगे झुकने से तुम्हारी अरुचि (किसी काम में रुचि न होना) सुरुचि में बदल जाती है। क्योंकि गुरु दया का भण्डार होता है, उसमें सुगन्ध आती है, उस के मुंह से रस टपकता है और उससे अलग होने को मन ही नहीं करता। उसके पास बैठने से एक विशेष प्रकार की प्राप्ति होती है। सद्गुरु आपको प्यार तो बेहद करता है, परन्तु उसके प्यार में राग अर्थात् मोह या लगाव नहीं होता। उसके प्रेम में अनुराग, आत्मिक प्यार होता है। भक्ति के बाद जो भाव आता है, उसे अनुराग कहते हैं। अनुराग से आदमी ऊंचा उठता है।

अमिअ मूरिमय चूरन चारू ।
समन सकल भव रुज परिवारू ॥

सद्गुरु के चरणों की रज बहुत ही सुन्दर तथा अमृत-मयी होती है। वह तुम्हारे काम, क्रोध, मोह, लोभ और अहंकार, जो भव रूप और दुःख देने वाले हैं, उनका शमन करके, आपको शान्ति प्रदान करता है और आपको ऊपर उठाता है। गुरु सब कुछ कर सकता है, क्योंकि वह अमल है, बिना मल के है और कर्मों से बन्धता नहीं। गुरु का बाहरी व्यवहार भले ही आम लोगों जैसा दिखे, लेकिन वह दुनिया में न्यारा है। गुरु को पहचानो।

चेतन घघ अमल विमल निर्मल।
सत्त सदन परम सुख रासी है॥

निर्मल वस्तु हमेशा आकर्षक होती है और गुरु हमेशा निर्मल होता है। सद्गुरु के अन्दर सत् का निवास होता है। सुख तो आपको खाने-पीने की वस्तुओं से भी मिलता है, इसमें सन्देह नहीं है, परन्तु यह सुख सदा रहने वाला नहीं है, यह समाप्त हो जाता है। परम सुख वह है, जिसका कभी अन्त नहीं होता। सद्गुरु के साथ रहने से आप उस अमृत को पीयेंगे, जिसके आगे सब प्रकार के सुख फीके लगेंगे। परमसुख की राशि तथा परमसुख का भण्डार तो केवल सद्गुरु ही है।

'कोई अगुन कहे, कोई सगुन कहे,
कोई निराकार साकार कहे।
तू सब कुछ है और कुछ भी नहीं,
धुर पद धुर धाम निवासी है॥'

कोई उस परमतत्व को निर्गुन कहता है, कोई उसे सगुन कहता है। सगुण का अर्थ है गुण सहित, जिसे देखा जा सके। परमतत्व, जब मनुष्य के चोले में आता है, तब सगुण ही होता है। यह सारा जगत् मालिक का गुण ही तो है, अर्थात् जगत मालिक का सगुण रूप है। मालिक सर्वाधार है। इस जगत् में जो गुण हमें दिखाई देते हैं, जैसे रूप की सुन्दरता, हवा की शीतलता, चखने का आनन्द

इत्यादि, सभी गुण आधारित उस सर्वाधार मालिक पर ही तो हैं। सभी सगुण चीजें उसी मालिक ही से निकली हैं। एक भी ऐसी वस्तु नहीं जो मालिक के साथ जुड़ी हुई न हो, उससे सम्बन्धित न हो। संसार सार ही के साथ जुड़ा हुआ है। संसार में आनन्द भोगना चाहिए, क्योंकि संसार सार ही के साथ लगा हुआ है। सगुण, निर्गुण से सम्बन्धित है। गिर्गुण के अन्दर सगुण छुपा हुआ है। अतः निर्गुण सगुण के झगड़े बेकार के झगड़े हैं।

अच्छाई-बुराई, झूठ-सच सब कुछ उस सर्वाधार से ही निकला है। द्वन्द्वात्मक जगत् बनाने के लिए इनको अलग अलग कर दिया। 'कुछ नहीं' का मतलब वहां शून्य नहीं है, बल्कि यह है कि जो कुछ उस सर्वाधार से निकला है वह पूर्ण नहीं, बल्कि मालिक का अंशमात्र ही है। यदि हम कहें कि वह आकाश है, तो क्या वह शब्द नहीं? मालिक तो सबसे ऊंचा है, उसका किसी के साथ मुकाबला किया ही नहीं जा सकता। 'कुछ नहीं' का मतलब 'न होना' नहीं, बल्कि इसका मतलब यह है कि मालिक अपने आप में एक विशेष वस्तु है, जिसका नमूना इस जगत् में नहीं मिलता, उसकी सुन्दरता का मुकाबला नहीं, उसकी महिमा की मिसाल नहीं। वह अद्वितीय है अद्भुत है।

नहीं मन ने थाह कभी पाई,
नहीं बुद्धि में आई चतुराई।
चित चिन्तन कैसे करे तेरा,
तू द्वैत अद्वैत प्रकाशी है॥

मन भी उसी ही मालिक से निकला हुआ है, मगर वह भी मालिक तक पहुंच नहीं सकता। चित् उसका चिन्तन नहीं कर सकता, चिन्तन तो उस चीज़ का किया जा सकता है, जिसकी कोई सीमा हो। अल्बर्ट आईनस्टाईन हमारे युग का सबसे बड़ा वैज्ञानिक हुआ है। उसने अपनी बुद्धि से एक फ़ार्मूला निकाला, जिसके आधार पर जगत् में व्याप्त सभी शक्तियों को समझा जा रहा है। आईनस्टाईन ने कहा, जगत एक शक्ति है जिसके अन्दर ठोसपन', 'गति' तथा 'ऊंचा जाना' तीन वस्तुएं हैं। इस फ़ार्मूले के आधार पर हवा की गति को पहचाना जा सकता है, पृथ्वी को भी समझा जा सकता है। इस महान् वैज्ञानिक के फ़ार्मूले के आधार पर अनेक आविष्कार हो रहे हैं और उसे दुनिया का सबसे बड़ा वैज्ञानिक माना जा रहा है। इस महान् वैज्ञानिक ने मरने से पहले कहा, 'मेरी खोज तो बस यहाँ तक ही है, इसके आगे तो सर्वाधार मालिक ही है।'

जब मन उस सर्वाधार तक पहुंच नहीं सकता, चित् उसका चिन्तन नहीं कर सकता, तो उस मालिक का वर्णन कैसे किया जा सकता है ?

'तू द्वैत अद्वैत प्रकाशी है।'

द्वैत में हमेशा संघर्ष रहता है इसलिए जगत् में सदा संघर्ष ही रहेगा। अद्वैतवादी कहते हैं कि मालिक दो नहीं, एक है। जब द्वैत तथा अद्वैत दोनों का ज्ञान देने वाला

मालिक स्वयं ही है, तो कैसे कहा जा सकता है कि वह दो है।

मन बना विहंगम मीन मकर,
मरकट बन कर कूदा अन्दर।
चींटी की चाल चला घट में,
कह उठा तू अगम उदासी है॥

मन चंचल है। सृष्टि में सबसे पहले जीव मछली के रूप में आया, फिर वराह के रूप में आया, फिर मकर के रूप में आया, जो आधा पृथ्वी पर और आधा समुद्र में था। फिर वह कच्छ के रूप में आया। फिर बन्दर के रूप में आया। बन्दर के बाद मनुष्य के रूप में आया। मन बन्दर की तरह इधर-उधर कूदता रहता है और पक्षी की तरह इधर-उधर ऊपर उड़ता रहता है। अब सवाल उठता है कि बन्दर की भांति इस चंचल मन को शान्त कैसे किया जाय? मालिक तो शान्त है। उस शान्त मालिक तक यह चंचल, अशान्त मन पहुंचे कैसे? इसका सही तरीका सद्गुरु ही बता सकता है, वह है नाम का सुमिरन। रोज लगातार सुमिरन करने से, कुछ दिन के बाद मन शान्त हो जायेगा, एक जगह टिक जायेगा। सुमिरन के द्वारा मन धीरे-2 चींटी की चाल से अन्दर की तरफ़ चला जायेगा। जब यह

वहाँ पहुंच कर परम आधार, परमतत्व को छूयेगा तब कहेगा 'तू तो परम उदासी है।" उदासी का मतलब है द्वन्द्व से परे। 'हे मालिक तू द्वन्द्व में नहीं है, राग-द्वेष से रहित है।' उदासो कौन है? जिसको न किसी से नफ़रत है न मोह,जिसका सहारा केवल मालिक ही है।

'न किसी से हमारा नाता,
न हम किसी से सहारा ढूंढ़ें।
रहें सदा तेरे ही सहारे,
दयाल दाता, कृपाल स्वामी॥'

जिसको सद्गुरु मिल गया, उसको सब कुछ मिल गया। ऐसे व्यक्ति की वृत्ति सद्गुरु में ठहर जाती है। वह रहता तो दुनिया में है दुनिया में अपना काम, अपना व्यवसाय या कारोबार भी बराबर करता रहता है, परन्तु लोगों की निन्दा-स्तुति का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, क्योंकि वह सर्वाधार से जुड़ जाता है। 'उ' का यहाँ मतलब है उधर या ऊपर का और दास का मतलब है नौकर। वह ऊपर का दास है मालिक का दास है, इस जगत् का दास नहीं।

राधास्वामी रूप में प्रकट हुआ,
दर्शन देकर कृतार्थ किया।
निज शब्द से अपना भेद दिया,
घट अघट का सत्य निवासी है॥

जब तक परम आधार, परमतत्व ऊपर बैठा है, उस तक हम प्राणी पहुंच नहीं सकते और न ही वह हमारी परेशानियों हमारी समस्याओं को समझ सकता है। ऊपर बैठे हुए, वह हमें दर्शन भी नहीं दे सकता। जब वह मनुष्य के चोले में आता है, तभी तो उसकी झलक हम देख सकते हैं, उसके साक्षात् दर्शन कर सकते हैं। परमतत्व हमारा आईना है, हमारा आकार उसी में ही दिखाई देने लगता है।

'निज शब्द से अपना भेद दिया।
घट अघट का सत्य निवासी है॥'

परमतत्व नीचे आ कर अपनी वाणी के द्वारा राज़ बताता हैं। सच्चा गुरु किसी भी हालत में अपने शिष्य से कोई बात छुपा कर नहीं रखता, कोई चीज़ पर्दे में नहीं रखता। वह बिना स्वार्थ के, अपना नुकसान करके भी, अपनी हानि करके भी, यहां तक कि अपने को समाप्त करके भी शिष्य को सच्चाई बताता है, असलियत बताता है। सन्तमत में सद्गुरु की संगत का यही मकसद या लक्ष्य है।

प्यारे सत्संगियो! बहुत कुछ कह दिया आपको। मैं आज का सत्संग यहीं समाप्त करता हूं।

सबको मेरा राधास्वामी!

× × ×

गरुड़ पुराण रहस्य

तृतीय भाग

गरुड़ पुराण पर प्रश्नोत्तर

परमसन्त परम दयाल
पंडित फकीर चन्द जी महाराज

(गतांक से आगे)

एक समय की बात है जब मैं सुनाम में स्टेशन मास्टर था। दाता दयाल (महर्षि शिव) वहाँ पधारे। वहां एक लखपति सज्जन थे। उन्होंने मुझसे कहा कि दाता दयाल उनके यहां खाना खायेंगे। जब उनसे कहा गया तो बोले फकीर? क्या तेरे घर में मेरे लिए टुकड़ा नहीं रहा! उन सज्जन से कहा कि तुम अमीर और मैं फकीर। मेरा तुम्हारा क्या सम्बन्ध? उनके कहने का अभिप्राय यह था कि मेरे

पास जिज्ञासु आयें। संत मार्ग जिज्ञासुओं का है। इसलिए मैं भी कहता हूं कि मेरे पास सचाई के जिज्ञासु आयें या वे आवे जो 84 के चक्र और आवागवन से बचना चाहते हैं। उनको चाहिए कि वे गुरु सेवा करें। बिना सेवा के किसी को कुछ नहीं मिलता। फिर गुरु सेवा क्या है ?

गुरु सेवा और गुरु

दर्शन करे बचन पुनि सुने।
सुन सुन कर निज मन में गुने॥
गुन गुन काढ़ि लिए तिस सारा।
काढ़ि सार तब करे अहारा॥
करि अहार पुष्ट हुआ भाई।
भव, भय, भौ सब गए नसाई॥

यह है गुरु सेवा। यदि धन देने वाले परमात्मा को पा सकते तो इस दौलत को पा जाते और निर्धन उससे वंचित रह जाते। मगर यह तो सुरत (तवज्जह) देने का विषय है। वचन सुनने और उनके गुनने, मनन करने से जैसा कि वाणी में ऊपर कहा है तुम्हारा बेड़ा पार होगा। केवल गुरु-2 या राधास्वामी-2 करने से काम न बनेगा। क्योंकि तुमको इस भवसागर से व यमराज से सतगुरु ही निकाल सकता है। वह सतगुरु कौन है ? वह है सच्चा ज्ञान सच्चा विवेक और सच्चा अनुभव और यह ज्ञान, विवेक तथा अनुभव जब मिलेगा, गुरु से ही मिलेगा।

जो लोग ये समझते हैं कि गुरु मरता है और जन्म लेता है अथवा एक गुरु मरा दूसरा गद्दी नशीन हुआ और ऐसा समझ कर उनको पूजता है तो उसका बेड़ा पार नहीं होता। कबीर साहब का सतगुरु की बाबत कहना है :—

"सतगुरु चीन्हा रे भाई"

सत्त नाम बिन सब नर बूड़े,
नरक पड़ी चतुराई ॥
वेद पुरान भागवत गीता,
इनको सबै दृढ़ावै ।
जाको जनम सफल रे प्रानो,
सो पूरा गुरु पावै ॥
बहुत गुरु संसार कहावें,
मंत्र देत है काना ।
उपजें बिनसें या भौ सागर,
मरम न काहू जाना ॥
सतगुरु एक जगत में गुरु हैं,
सो भव से कढ़ि हारा।
कहैं कबीर जगत के गुरुआ,
मरि मरि लें अवतारा ॥

दृढ़ाने का अर्थ है रटना। उन्हीं शब्दों को बार-बार बोलना। वेदों का पाठ इसी तरह से 84 के चक्र से छुड़ाने के लिए दृढ़ाना है। यह नहीं कि वेदों का पाठ गलत है।

स्कूल में जो बच्चा पहाड़े बार-बार नहीं बोलता अर्थात् दृढ़ाता नहीं वह आगे चलकर फेल रहेगा। जब पहाड़े याद हो जायेंगे तब आगे चलेगा। इसी प्रकार जब वेद वाणी दृढ़ हो जायगी तब आगे चल सकेगा। वेद पाठ का महत्व इतना हो है जितना कि बच्चे के पहाड़े।

इस सिलसिले में एक बात याद आ गई। होशियारपुर में एक वृद्ध पुरुष 82-83 वर्ष की आयु का हैं। उसने श्री ब्रह्माशंकर जी महाराज से नाम लिया हुआ था। उनके चोला छूटने पर उसने साहब जी महाराज को व उनके बाद दूसरों को गुरु माना। उनका पोता मेरे पास आया। उसने कहा कि मेरे बाबा इतने गुरुओं से मिलकर भी अशान्त हैं। उनकी शिकायत है कि संत मत की शिक्षा गलत है? सोचता हूं उसने एक गुरु से नाम लिया, फिर दूसरे को गुरु माना। चूंकि गुरुओं ने यह ख्याल दिया हुआ है कि जब एक गुरु मर जाता है, उसकी रूह दूसरे गुरु में चली जाती है मगर सतगुरु कभी मरता नहीं। संत कबीर का भी ऐसा कथन है। उसकी तालीम सब पंथ वाले मानते हैं। उनके पिछले शब्द सतगुरु चीन्होरे भाई' में एक कड़ी आती है।

'सत्तगुरु एक जगत में गुरु है,
सो भव से कढ़ि हारा।
कहैं कबीर जगत के गुरुआ,
मरि मरि ले अवतारा॥

जब एक गुरु की रूह दूसरे चोला में आई तो उसकी रूह बिना मरे हुए दूसरे चोले में नहीं जा सकती। अफसोस ! गुरु के रूप को नहीं सम्झा गया। इन वृद्ध सज्जन ने गुरु के रूप को नहीं समझा और न वास्तविक रूप से गुरु धारण किया। इसलिए वह अशान्त रहे। मेरी ड्यूटी है कि सच्चा व सही मार्ग बता जाऊं। बाकी काम तुमको करना है। इस साफ बयानी से मेरी आत्मा पर कीई बोझ नहीं रहता।

विचारों की फुरना

जब तुम स्वप्न में हो या अभ्यास में बैठते हो अथवा मृत्यु के बाद लम्बे स्वप्न में हो तो तुम्हारे अन्दर वही फुरेगा या फुरता है जो तुमने अपने जीवन में किया है या सोचा है या जैसे जैसे विचारों ने तुम्हारे हृदय में घर किया हुआ है। यदि जीवन में धोखे ईर्ष्या द्वेष आदि के विचार रहे हैं तो वही रूप बन कर आयेंगे। यदि मैं अपनी मान प्रतिष्ठा के लिए सच्ची बात न कह कर तुमको धोखे में रखता हूं तो वही विचार भयानक रूप रख कर मेरे सामने आयेंगे। मैं उनसे बच कैसे सकता हूं और तुम भी कैसे बच सकते हो ?

मेरी स्त्री को नाम मिला हुआ था। वह स्वप्न में डरा करती थी। अभ्यास करती तो सांप शेर आदि दिखाई देते

और उसे डर लगता था। दाता दयाल महर्षि जी महाराज से कहा गया। उन्होंने कहा कि यह इसके प्रारब्ध कर्म हैं मगर यह तुम्हारी संगत से कट जायेंगे और अभ्यास करने को मना कर दिया।

जब तुम लम्बे स्वप्न में जाते हो तो शरीर तो वहां होता नहीं, केवल स्वप्न की फिल्म चलती रहती है। उस स्वप्न की फिल्म से गुरु बचा सकता है। गुरु तुमको नाम और ध्यान बता देगा। कोई संस्कार दे देगा।

धर्म

गरुड़ पुराण में लिखा है कि जब मनुष्य मरता है तो धर्म ही रक्षा करता है। अब धर्म क्या है? धर्म कहते हैं किसी इष्ट, आईडियल, नाम, विचार, संस्कार को धारण कर लेना। तुम देखते हो कि जब साधन में बैठते हो तो मन कठिनता से एकाग्र होता है। छलांगें मारता है। तरह-तरह के संकल्प उठाता है मगर चूंकि तुमको संस्कार मिला हुआ है तुम गुरु के दिए हुए नाम व रूप को बनाओगे और तुम्हारे चिदाकाश पर जो संस्कार पड़े हैं वह सामने आने लगेंगे। उस नाम और रूप ने जिसको तुमने धारण कर रखा है वह तुमको स्वप्न की फिल्म से निकाल ले जायगा और इस तरह धर्म तुम्हारा रक्षक और सहायक होगा।

हिन्दुओं में यह प्रथा है कि जब प्राणी मरने लगता है

तो उससे गौदान कराते हैं और गौ की पूंछ उसके हाथ में देकर दान करा देते हैं। चूंकि हिन्दुओं में गाय को बहुत पूज्य माना गया है तो मरने वाले के सामने यह गौ का ख्याल दूसरे गंदे विचारों से बचा देता है और वह स्वप्न की फिल्म से बच जाता है।

कोई भी धर्म या सम्प्रदाय वाला हो यमराज से सबको गुजरना पड़ता है, इसलिए गरुड़ पुराण का यह कथन सबके लिए है चाहे वह ईसाई हो, सिक्ख हो, पारसी हो यहूदी हो, मुसलमान हो या कोई और हो। कोई बच नहीं सकता है।

यह सवाल किया जा सकता है कि दूसरे सम्प्रदाय वाले तो यमराज को मानते नहीं हैं फिर उनको यमराज से क्यों गुज़रना पड़ेगा ?

यमपुर-यमदूत-चित्रगुप्त

देखो ! यमराज शब्द के झमेले में न पड़ो। जो सिद्धान्त है उसे समझो। सिद्धान्त किसी एक धर्म संप्रदाय की वस्तु नहीं होती। वह तो प्राणी मात्र के लिए लागू होती है। यह विज्ञान का नियम है। तुम जब एकान्त में बैठते हो या अभ्यास करते हो तो एक विशेष पाइन्ट या ख्याल को लेकर चलते हो और जब तक एक नाम और रूप का

सहारा नहीं है तो वह ख्याल बढ़ता ही जायगा। यही दशा मरते समय होती है। जो जो ख्याल संस्कार चिदाकाश पर पड़े होते हैं वे सामने आने लगते हैं और उन्हीं में फंसा रहकर प्राणी शरीर त्याग देता है और इस तरह यमराज से बच नहीं सकता है।

पहले पहल ख्याल छोटा होता है। इसलिए सूक्ष्म शरीर अंगुष्ठ समान कहा गया है। यदि अभ्यास में सुमिरन ध्यान छूट जाय तो मन के विचार बेहद बढ़ जाते हैं। मरते समय किसी को अपने गुरु या इष्ट या राम कृष्ण आदि का ध्यान बंध जाय तो यह यमराज के दुखों से बच जायगा। इसीलिए कहा गया है;—

बुरा भला जो गुरु भगत,
कबहुं नर्क न जाय।

सवाल होता है कि क्या कोई वास्तव में यमपुर है? हां, है। देखो! हमारे शरीर के अन्दर असली रूप सुरत है। इस पर प्रकाश का रूप चढ़ा हुआ है। उस पर मन का खोल है। जब मनुष्य मरता है तो उसका सूक्ष्म शरीर या वासना निकल जाती है और दूसरा जन्म लेने तक भ्रमण करती रहती है। इसका प्रमाण इस समय भी होशियारपुर में मौजूद है। वहां एक ऐसा सूक्ष्म शरीर है।

लोगों ने सूक्ष्म शरीर से बातें की हैं। वहां एक बाबा

सीलू है। उसका स्थूल शरीर नहीं है मगर वह शरीर सीटी में बातों का उत्तर देता है। जिसके ज़रिए बाबा सीलू आता है और उत्तर देता है, वह मेरा एक मित्र हैं। इससे सिद्ध होता है कि जब स्थूल देह से सूक्ष्म शरीर निकलता है वह प्रेत योनि में जाता है। इससे बचने के लिए सुमिरन ध्यान ही सहायक है। सम्भव है दूसरे पंथों में कोई और तरीका हो।

हमको स्वप्न आते हैं। वह 1-2 मिनट के होते हैं जिसमें वर्षों की घटनायें गुजर जाती हैं। एक बार मुझे मेरी लड़की ने अपना स्वप्न सुनाया कि वह पैदा हुई, बच्चे हुए, उसका भाई पदम अलग हो गया। इसमें 80 वर्ष लगे। हम फिर मिले। गोद में लिया। मैं रो पड़ी। स्वप्न था 3 मिनट का और साल भोगे 80। यदि सुमिरन ध्यान नहीं मिला तो इस योनि में पहुंचावेगा जो ऊपर बताई गई है। जब तक तुम स्वप्न में हो दुख सुख से बच नहीं सकते। इससे कौन बचायेगा ?

—क्रमशः

नारायण दास डोगरा

परमदयाल सर्वहतकारी मानवता मन्दिर,
फ़कीरधाम, सरड़ डोगरी, बरास्ता रक़कड़ ज़िला कांगड़ा,
हिमाचल प्रदेश।

वैसाखी सन्देश

परम सन्त सद्गुरु हिज़ होलीनेस
मानव दयाल

डा. ईश्वर चन्द्र शर्मा जी महाराज

मेरी अपनी ही आत्मा के अंश परमप्रिय सत्संगियो,
राधास्वामी, परमदयाल जी सहाई।

परमदयाल जी महाराज के परमधाम सिधारने के बाद करीब 14 वर्ष गुज़र चुके हैं। वैसाखी का उत्सव भारत में और भारत के बाहर भी बड़े उत्साह से मनाया जाता है। तिब्बत में जो थियोसोफ़ीकल परम्परा के गुरु हैं, वह इस उत्सव को विशेष महत्व देते हैं। वे अश्वनी कुमार को इस भारत का ही नहीं, बल्कि सारे जगत् का मार्ग दर्शक मानते हैं। हर युग के महात्मा बुद्ध उस समय अश्वनी

कुमार का स्थान ग्रहण करते हैं, जब अश्वनी कुमार किसी ओर ब्रह्माण्ड की अध्यात्मिकता का कार्य संभाल लेते हैं। श्रीमती एनीबेसैन्ट ने जे. कृष्ण मूर्ति को कहा कि वह तिब्बत में थियोसोफीकल परम्परा के अध्यक्ष उस समय के महात्मा बुद्ध को मिले और महात्मा बुद्ध का स्थाह ग्रहण करें। श्री कृष्ण मूर्ति ने अपनी पुस्तक **(At the feet of the Master)** 'सद्गुरु के चरणों में' इस तथ्य को स्वोकार किया है। श्री कृष्ण मूर्त्ति अपने जोवनकाल में ऐसी उच्च अवस्था पर पहुंच गये थे, जहां पर उन्हें किसी मार्गदर्शक की सहायता की ज़रूरत नहीं थी। उन्होंने इस बात को अपनो पुस्तक, **Last Freedom** अर्थात 'अन्तिम स्वतन्त्रता' में इस बात को लिखा हैं। वास्तव में उनकी शिक्षा दातादयाल महर्षि शिवब्रत लाल जी महाराज और परमदयाल पंडित फ़कीर चन्द जी महाराज की शिक्षा से शत प्रतिशत मेल खाती है।

वैसाक्षी शब्द का अर्थ पारब्रह्माण्ड का 'साक्षी' है और वही साक्षी सद्गुरु वक्त एवं अपने समय का अवतार माना जाता है। श्रीमती ब्लैवत्सकी ने भारत की परम्परा की पूरी व्याख्या की है और बताया है कि हज़ारों युगों के पश्चात् जब एक मन्वन्तर गुज़र जाता है, तो परमात्मा का पूर्ण अवतार इस जगत् के उत्थान के लिए प्रगट होता है। एक बार सन् 1875 में मैडम ब्लैवत्सकी इंग्लैंड के उस गांव में आयीं, जहां पर मेजें अपने आप चल रही थीं और यह माना जा रहा था कि कोई शरीर से अलग आत्माएं उन मेजों को

चला रही हैं। हजारों लोग उस गांव के मकान में तमाशा देखने के लिए एकत्रित हो रहे थे। इस मकान का और सारी घटनाओं का अध्यक्ष हैनरीस्कौट था। मैडम ब्लैवत्स्की ने उसको कहा कि वह तो स्वयं यह तमाशा दिखा सकती हैं और उन्होंने ऐसा ही किया। इसके फलस्वरूप उसी वर्ष मैडण ब्लैवत्स्की ने लंडन में एक संस्था स्थापित की जो ऐसी घटनाओं को घटित करा सकती थी। लेकिन इंगलैंड की सरकार ने और इंग्लैंड के पादरियों ने इस संस्था को इंग्लैंड में टिकने नहीं दिया। इसके फलस्वरूप मैडम ब्लैवत्स्को ने मद्रास में कई एकड़ के क्षेत्र में इस संस्था को स्थापित किया। जब थियोसोफीकल सोसायटी के गुरु साक्षात् प्रगट होते थे, तो मैडम ब्लैवत्स्की उनके सन्देह को दूर कर देती थीं। इसलिए उन्होंने इस संस्था का (Inner Circle) अन्तरिम केन्द्र स्थापित किया, जिनके सामने उस संस्था के गुरु प्रकट होते थे।

मैं यह बात इसलिए लिख रहा हूं कि मैं स्वयं इस अन्तरिम केन्द्र का सदस्य हूं। सौभाग्यवश मैं केवल 5 वर्ष की आयु में ही इस संस्था का उस समय सदस्य बना जब महामना मालवीया जी ने मुझे गायत्री मन्त्र की दीक्षा दी थी। श्रीमती एनीबेसैन्ट ने भी मालवीया जी से ही दीक्षा ली थी। उन्होंने भगवद् गीता का अंग्रेजी में अनुवाद किया और गीता के लक्ष्य की व्याख्या करते हुए लिखा 'Off all the songs of Mahabharata, there is none so precious as this—the Lord's Song. Eversince it fell

from the Divine Lips of Lord Krishna, how many troubled hearts has it quited ! How many troubled souls has it led to Him ! It is meant to lift the aspirant from the lower levels of renunciation to the loftier heights, where the Yogi lives in deep contemplation, while his body and mind are eugaged in discharging the duties that fall to his lot in his life.

अर्थात् जब से यह संगीत भगवान श्री कृष्ण के पावन होठों से निकला है, कितने ही लोगों को उसने श्री कृष्ण की ओर खींचा है। कितने ही लोगों को एवं दूखित हृदयों को उसने शान्ति प्रदान की है इसका उद्देश्य योगी को नीचे के दर्जो से उठाकर उच्चतम् पावन अवस्था पर पहुंचाया है। इसका उद्देश्य साधक को नीचे के स्तरों से उठाकर उस उच्चतम स्थल पर पहुंचाना है, जहां उसको इच्छाएं समाप्त हो जाती हैं और जहां पर अत्यन्त गहरी समाधि में पहुंच जाता है, जबकि उसका शरीर और मन उन कर्त्तव्यों के निभाने में लगा रहता है, जहाँ पर गहरी समाधि में उसके वे सभी कर्त्तव्य परिपूर्ण हो जाते हैं, जो उसके भाग्य में आते हैं।

वैसाक्षी को यह परिभाषा अत्यन्त स्पष्ट और सरल है। वैसाखी के उत्सव पर सभी बच्चे और बड़े व्यक्ति सूखे बेरों की मालाएं पहनकर निकटवर्ती नदी पर प्रातःकाल नहाने के लिए जाते हैं। यह मालाएं इस बात का प्रतीक हैं कि

शंकर भगमान की तरह यह रुण्ड मुण्डों की मालाएं होती हैं। भगवान शंकर के एक सौ आठ मुण्ड वास्तव में एक सौ आठ शक्तियां हैं, जिनके द्वारा भगवान शंकर इस जगत् को चलाते हैं और उसकी रक्षा करते हैं।

जैसा कि पहले भी जहां पर बताया गया है कि सन्तमत और सनातन धर्म में कोई भेद नहीं है। सन्तमत एक दृष्टि से सनातन धर्म का अंश मात्र है। सनातन धर्म का आधार वेद पुराण उपनिषद और भगवद्गीता है। जिन लोगों को इनका ज्ञान नहीं है, वे सन्तमत को नहीं समझ सकते। वेदों के आधार पर ऋषियों ने 6 आस्तिक दर्शनों और तीन नास्तिक दर्शनों का प्रतिपादन किया है। न्याय वैशेषिक सांख्य योग मीमांसा और वेदान्त आस्तिक दर्शन हैं। जैन बौद्ध और चारवाक् दर्शन नास्तिक दर्शन कहलाते हैं। वास्तव में यह नास्तिक दर्शन भी एक दृष्टि से आस्तिक हैं। वेदों के 6 उपांग माने गए हैं, जिनका नाम शिक्षा, कल्प छन्द, व्याकरण, ज्योतिष निरुक्त हैं। इन सबकी व्याख्या वेदों के ज्ञान को समझने के लिए अत्यन्त आवश्यक है। शिक्षा का अर्थ हरएक शब्द के विशेष अंग पर बल देना है। इसलिए शिक्षा आधारभूत शास्त्र है! छन्द विशेष समय के विशेष प्रकार के राग का अनुसरण करना है। जो राग प्रातःकाल गाया जाता है वह संध्या को नहीं गाया जाता। इस प्रकार व्याकरण एक वाक्य को सार्थक बनाता है। निरुक्त हरएक शब्द के विभेष अर्थ को स्पष्ट

करता है। निरुक्त का सबसे विख्यात रचयिता सायण ऋषि हुआ है, इसी के शास्त्र को डा. लक्ष्मण स्वरूप ने पूरी तरह से अंग्रेजी भाषा में अभिव्यक्त किया है। इस शास्त्र को निघन्टु भी कहा जाता है। हमें डाक्टर लक्ष्मण स्वरूप ने स्वयं निरुक्त पढ़ाया। इसलिए मैं इस सम्बन्ध में अधिकार पूर्वक लिख सकता हूं। वर्तमान काल में एक भाषा का अनुवाद दूसरी भाषा में यन्त्र द्वारा किया जाता है। इसका परिणाम भ्रान्तिकारक होता है। उदाहरण स्वरूप शैक्सपियर के नाटक हैम्लैट के पहले दृश्य में हैमलैट कहता है 'To be or not to be, is the question' अर्थात प्रश्न यह है कि मैं ज़िन्दा रहूं या न रहूं। इसी नाटक का अनुवाद यन्त्र द्वारा इटैलियन भाषा में किया गया और फिर अंग्रेज़ी भाषा में किया गया। अन्तिम अनुवाद यह था। Is it or is it not, that is it अर्थात् ये है या वो है, कुछ भी नहीं है। यन्त्र द्वारा अनुवाद करनें से इस प्रकार भ्रान्ति उत्पन्न हो जाती है। तर्क शास्त्र में भाषा सम्बन्धी अनेक तर्काभास बताए जाते हैं। उदाहरण स्वरूप Lost a dog that answers to the name of Tom यहां पर यह स्पष्ट नहीं है कि कुत्ते का नाम टाम है या मालिक का नाम टाम है। इसी प्रकार तर्क शास्त्र में कहा जाता है कि तुम दो मिले जुले सवालों का एक ही जबाब दो। उदाहरण स्वरूप क्या आपने अपने पिता को पीटना बन्द कर दिया है। इसमें दो सवाल मौजूद हैं। एक तो यह है, कि आप अपने पिता को पीटते थे और दूसरा यह है कि आपने उन्हें पीटना बन्द कर

कर दिया है। इसका जवाब एक नहीं हो सकता। यह भाषा का तर्काभास है। ऐसे अनेक तर्काभास तर्क शास्त्र में मिलते हैं। इसलिए तर्काभास से बचना चाहिए। भाषा की स्पष्टता नितान्त आवश्यक है। जैसे हमने पहले कहा है, कि कोई भी सच्चाई पूरी तरह से निश्चित नहीं है। सन्देह उपनिषद बताता है कि यदि हम सन्देह से चलें तो अन्त में हमें निश्चितता पर पहुंचना पड़ता है। मान लीजिये मैं भौतिक वस्तुओं पर सन्देह करता हूं। मैं मानसिक अनुभवों पर भी सन्देह करता हूं। मैं आत्मा पर भी सन्देह करता हूं और मैं ईश्वर पर भी सन्देह करता हूं। किन्तु मैं इस बात पर सन्देह नहीं कर सकता, 'मैं सन्देह कर रहा हूं। यदि मैं नहीं हूं तो सन्देह भी नहीं है। इसलिए सन्देह एक बड़ी भारी भ्रान्ति है। सन्देह उपनिषद हमारे सन्देह को अप्रमाणित कर देता है।

ऊपर दी गई व्याख्या हमें इस निष्कर्ष पर पहुंचाती है कि हमें जीवन में कभी भी सन्देहवादी नहीं होना चाहिए।

इंग्लैण्ड के विख्यात विचारक ह्यूम ने कहा था, 'जब मैं यह जानना चाहता हूं 'मैं क्या हूं' तो मैं देखने, सुनने, सूंघने चखने और स्पर्श करने के अनुभवों को ही सत्य मानता हूं। यदि यह अनुभव न हों, तो मैं नहीं हूं। ह्यूम महोदय इस बात को भूल जाते हैं कि वह एक ऐसे व्यक्ति की तरह व्यवहार कर रहे हैं, जो अपनी कुर्सी से उठकर बाहर से खिड़की द्वारा अपनी खाली कुर्सी को देखकर कहता है, 'मैं

कुर्सी पर नहीं हूं, इसलिए मैं नहीं हूं। वह अपने आपको नकार रहा है। और उसका यह नकारना सर्वथा तर्कातर है,

इन शब्दों के साथ मैं आप सबको वैसाखी की सद्भावना देता हूं और सच्चे दिल से चाहता हूं कि यह संदेश आपको प्रेरणा दे और आप तथा आपका परिवार सुख आनन्द और शान्ति का अनुभव करे।

सबको राधास्वामी !

आपका फकीरमय
मानव

परम संत परम दयाल पंडित फकीर चन्द जी महाराज

के अनमोल वचन

卐 प्रार्थना 卐

परमेश्वर की कृपा और वरदान चाहने वाले, निराश मत हो। प्रभु के यहाँ किसी बात की कमी नहीं है। विश्वास रख कर अपने अन्तर को शुद्ध कर। फिर कोई कारण नहीं कि तुझे उस की कृपा और दया का लाभ न मिले। द्वार खटखटाओ और वह खोला जाएगा, मांगो और मिलेगा। यदि नहीं मिलता या कोई कमी है तो केवल यह कि मांगना नहीं आता।

एक लक्ष्य निश्चित कर लो, एक आदर्श का सहारा लो। उसे पूर्ण मानो। अहंकार त्याग दो, मैं को दूर हटा दो। अहं को छोड़ कर नम्रता और दीनता से उस के सामने मस्तक झुका दो। श्रद्धा और शरणागति का मार्ग

अपनाओ। उसके आधीन हो जाओ, जिस प्रकार बालक माँ की गोद का सहारा लेता है। तुम्हारी वह प्रत्येक कामना जिस से किसी की हानि न होती हो अवश्य पूरी होगी। कृपा का बादल उमड़ेगा और दया की वर्षा होने लगेगी यदि दिल में नम्रता और शरणागति का भाव होगा। गुरु नानक जी ने फ़र्माया है :—

बड़े बड़े हंकारिये नानक गर्भ गले।

जिन्हों ने अहंकार छोड़ दिया, मैं को निकाल दिया, वे तर गए।

यदि नम्रता और दीनता पूर्वक अपने आराध्य के सम्मुख प्रार्थना की जाए तो सोने पर सुहागा है। वह प्रार्थना अवश्य पूरी होती है। कामना फलवती होती है यदि चित्त शुद्ध हो। यदि चित्त मलीन हो तो भी इच्छा पूरी होती है परन्तु, उसके बुरे प्रभाव से कोई बच नहीं सकता।

प्रार्थना, अर्दास एक अजीब और निराली वस्तु है। प्रार्थना यदि हृदय से की जाए और आराध्य पर अटल विश्वास हो तो बहुत बड़ी शक्ति होती है। चमत्कार हो जाता है यदि प्रार्थना करते समय दिल भर आए, आंखों से आँसू टपकने लगें और बेबसी प्रकट हो। तब सफलता अवश्य मिलती है।

जब प्रार्थना की जाए, मन साफ़ हो, आंखें बन्द हों। आराध्य को छोड़ कर कोई और विचार चित्त में न हो। आराध्य का अस्तित्व कल्पना की आंखों में प्रत्यक्ष हो। उसको सर्व व्यापक मान कर प्रार्थना करो।

ऐतिहासिक घटना है कि बाबर ने प्रार्थना की। उसका बेटा हुमायूं स्वस्थ हो गया और बाबर चल बसा। यह सच्ची घटना है। विश्वास रखो कि तुम्हारे आराध्य के कान हैं, आंखें हैं, तुम्हारी भावनाओं को अनुभव करने वाला उसके पास दिल भी है। वह पूर्ण है तुम्हारी सुनता है और उसे पूरा करने को वह तत्पर, तैयार रहता है।

वह दयालु है, कृपालु है। अपने भक्तों के कष्ट सहन नहीं कर सकता। उनको दुःखी देख कर, आह को सुनते ही तुरन्त आ मौजूद होता है तथा दुःख और कष्ट निवारण कर देता है। जिनके दिल में विश्वास है और आशा बांध कर प्रार्थना करते हैं उनकी सुनी जाती है। कबीर साहब कहते हैं :—

दास दुःखी तो मैं दुखी,
आदि अंत तिहुं काल ॥
छिन एक में प्रकट हो,
पल में करूं निहाल ॥
वह सुनता है, अवश्य सुनता है,
एक दम सुनता है।

परन्तु हम उसको बुलाना नहीं जानते। मन में प्रेम और विश्वास नहीं, प्रार्थना में सच्चाई नहीं, दिल में सफ़ाई नहीं। कष्टों और दुखों ने बेबस और लाचार किया नहीं। अहंकार त्यागा नहीं। देखा देखी एक रीति पूरी कर दी। क्या ख़ाक़ परिणाम होगा ? उसको अपने से दूर समझा। पराया माना। मंदिर और मस्जिद का बन्धुआ ख्याल किया। क्या नतीजा निकला ?

याद रख, वह हमेशा तेरे पास है। तेरे दिल के अन्दर है। तेरे श्वासों का श्वास है। यह निकट से निकटतम है, तेरा अपना है, आवाज़ लगा कर देख, वह दौड़ता हुआ आएगा और पलभर में कठिनाई दूर कर देगा जैसे :—

दिया चीर द्रौपदी को,
गाए जमाई नामे की।
पुकार सुन पधारे वह,
सुनी मीराबाई की।

वह तेरा है, तू उसका है। वह समुद्र है, तू बूंद है। समुद्र की सारी शक्ति बूंद के पीछे लगी रहती है। उसे अपने आपे में ढूंढे। आशा रख, विश्वास रख। वह तेरे सभी दुख दूर करेगा। वह समर्थ है, दुख दूर करने की शक्ति रखता है।

दिल का हुजरा साफ़ कर,
जानां के बिठाने के लिए।

ध्यान ग़ैरों का हटा,
उसको रिझाने के लिए।

जहां दवा असर नहीं करती, बाहरी प्रयत्न व्यर्थ हो जाते है, कोई सहारा बाकी नहीं रह जाता, वहां दुआ, प्रार्थना प्रभाव दिखाती पाई गई है।

काम जब होता नहीं तदबीर से।
होती है मुश्किल कुशाई मेहरे पीर से॥

याद रखिये! जब कभी निराशा की घटा छाई हुई हो, आशा टूट रही हो, निराशा की बिजली चमक रही हो, घुप्प अन्धेरा ही अन्धेरा दिखाई दे रहा हो तो मनुष्य विश्वास करे।

दुआ और प्रार्थना इन्सान का बड़ा भारी सहारा है।

शोक समाचार

बड़े दुःख के साथ हमें सत्संगीजन को सूचित करना पड़ रहा है कि हजूर परमदयाल जी महाराज के पुराने श्रद्धालु भक्त हृदय स्वर्गीय श्री लाहौरी राम जी के सुपुत्र श्री शब्दानन्द जी 8-3-1996 को स्वर्ग सिधार गए तथा ऐसे ही एक और पुराने श्रद्धालु सत्संगी श्री घनश्याम भारद्वाज जी के पालमपुर निवासी भाई श्री आत्माराम जी का मण्डी (हिमाचल) के निकट हुई एक बस दुर्घटना के कारण 16-12-1995 को असमय निधन हो गया।

मानवता मंदिर परिवार दिवंगत आत्माओं, श्री शब्दानन्द जी एवं श्री आत्माराम जी के परिवारों और अन्य सभी सगे सम्बन्धियों के इस दुःख के समय में अपनी संवेदनाओं सहित उनके साथ रहते हुए परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्माओं को चिर शांति प्रदान करें तथा शोक संतप्त परिवारों को इन अपूर्णीय क्षतियों को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

जनरल सैक्रेटरी,
मानवता मंदिर, होशियारपुर।

राधास्वामी नाम-ध्वनि

राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ।
अलख अगम और अनामी ।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ।
परम सन्त का रूप धरा, जीवो पर उपकार किया।।
सीधा सच्चा मार्ग दिया, आये धुर पद धामी।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ।।
बन कर आये परम फ़कीर, हरने सब जीवों की पीर।
परम दयालु दानी वीर, नाम दान के दानी ।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ।।
राम भी हो और कृष्ण भी तुम ।
तुम महावीर और बुद्ध गौतम ।
अक्षर ब्रह्म और पुरुषोत्तम, सब नामों में अनामी ।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ।।
मानवता का किया प्रचार, निज अनुभव का दे दिया सार
ऐसे गुरु जी को बारम्बार, नमामि नमामि नमामि ।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ।।
दाता दयाल के प्यारे तुम, मानव के रखवारे तुम ।
निर्गुण और सगुण भी तुम, सब के अन्तर्यामी ।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ।।

BOOK POST

Regd No. 26265/74 APRIL 10th 1996

MANAV MANDIR PB HSP—6

Address

2752 T. BADHUR SINGH
HNo 6-2-99, CHURASTREET
HANAMKONDA
(506011)

MANAVATA MANDIR
SUTEHRI ROAD [PHONE : 22639
HOSHIARPUR 146001

Shiv Dev Rao press Manavta Mandir Hoshiarpur (pb.)